HANDOUT

यह पाठ एक रेखाचित्र है जिसमें लेखिका ने सभी पालतू जीवो में से एक मोर नीलकंठ के स्वभाव ,उसके व्यवहार व उसकी चेष्टाओं का वर्णन किया है। लेखिका चिड़िया वाले बड़े मियां की दुकान से दो मोर के बच्चों को खरीद कर लाती है और अपने घर पर इनकी सुरक्षा का ध्यान रखती है ।अपने अध्ययन कक्ष में कुछ दिन रहने की व्यवस्था करती है फिर जाली घर में इन्हें पहुंचा देती है जाली घर में सभी जीव जंतु इन दोनों नए मेहमानों का स्वागत नववधू के समान करते हैं। धीरे-धीरे दोनों बड़े होने लगे और सुंदर मोर मोरनी में बदल गए ।मोर की गर्दन नीली होने के कारण उसका नाम नीलकंठ रखा गया और मोरनी सदा मोर के साथ रहती थी अतः उसका नाम राधा रखा गया ।नीलकंठ के क्रियाकलाप लेखिका को आकर्षित करते थे ।नीलकंठ को जाली घर के सभी जीव जंतुओं ने अपना सेनापति नियुक्त कर लिया था ।नीलकंठ ने एक बार एक शिशु खरगोश की जीवन की रक्षा एक सर्प से की थी ।नीलकंठ वर्षा ऋतु में मनमोहक नृत्य करता था ,फिर कुब्जा नामक मोरनी का नीलकंठ व राधा की प्रसन्नता भरी जीवन में आगमन होता है ।कुब्जा नाम के अनुसार ही झगड़ालू स्वभाव की थी उसने नीलकंठ और राधा के अंडों को फोड़ दिया जिसके कारण नीलकंठ को बहुत दुख हुआ ।लेखिका को आशा थी कि कुछ समय में सब ठीक हो जाएगा लेकिन ऐसा नहीं हुआ ।तीन-चार महीने बाद अचानक एक दिन लेखिका को वह मरा हुआ मिला ।उसे लेखिका एक साल में लपेटकर गंगा में प्रवाहित कर देती है। नीलकंठ के ना रहने पर राधा भी उसका इंतजार करती रहती थी ।कुब्जा ने भी नीलकंठ की खोज प्रारंभ की। कजली और कुब्जा में हुए झगड़े के कारण कुब्जा के जीवन का भी अंत हो जाता है राधा नीलकंठ की प्रतीक्षा भी अभी तक कर रही है ।बादलों को देखते ही वह अपनी केका ध्वनि से नीलकंठ को बुलाती है।